Part III
P. VIII

Que7 ~~Analyse exi~~

अशोक के तेरहवें शिलालेख पर प्रकाश डाले

Ans —

अशोक के तेरहवें शिलालेख का मुख्य उद्देश्य है कि धम्मविजय की घोषणा करना। अशोक कालीन इतिहास और उसके काल निर्णय का एक प्रमुख स्रोत है।

अशोक ने अपने अभिषेक के आठ साल के बाद कलिंग देश को विजित किया। वहां डेढ़ लाख मनुष्य कर लिए गये, एक लाख मारे गये और इससे भी कई गुने अधिक काल कवलित हो गये। अशोक को कलिंग विजय पर बहुत पश्चाताप हुआ उसे यह देखकर बड़ा खेद हुआ कि किसी नये देश के विजय करने में कितने लोगों की हत्या, मृत्यु और कैदी होनी है। उसे यह सोचकर और दुख हुआ कि वहां भी ब्राह्मण श्रमण तथा अन्य सम्प्रदाओं के मनुष्य तथा गृहस्थ रहते हैं जिनमें वृद्ध जनों की सेवा माता-पिता और गुरुओं की सेवा तथा मित्रों, परिचितों, सखियों और सम्बन्धियों तथा दासों और सेवकों से उचित व्यवहार और दृढ़ अनुराग होता है। युद्ध में ऐसे ही कितने धार्मिक लोगों को भी जो, हानि, मृत्यु या प्रियजनों से दूर निर्वासन हो जाता है। यह विपत्ति सभी को भोगनी पड़ती है। इससे अशोक को बहुत दुख हुआ। अतः कलिंग देश के विजय के समय जितने आदमी मारे गये या कैद किये गये उनके शतांश या सहस्रांश को भी उसने दुःख जनक समझा। वनवासियों के प्रति भी उसने अनुग्रता प्रदर्शित की और उन्हें कुमार्ग से रोकने की कामना करता है।

अशोक ने धम्म के द्वारा प्राप्त होने वाली विजय (धम्मविजय) को सबसे मुख्य विजय समझा। उसकी यह नवीन नीति निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित थी

(1) सब जीवों के लिए रक्षा (अक्षति)
(2) आत्मसंयम - (संयम)
(3) निष्पक्षता (समाचार और
मद्रता।

अशोक ने इस शिलालेख में धम्म विजय को ही सबसे मुख्य विजय समझा। यह विजय ~~अशोक विजय को ही सबसे~~ अशोक के अपने राज्य में तथा सब सीमान्त प्रदेशों में छसौ योजन तक जिसमें अंतियोक नाम का यवन राजा (सीरिया का यूनानी राजा) तथा अन्य चार राजा तुरमय (मिस्र का यूनानी राजा टोलेमी II फिलेडेलफस) अंतेकिन (मकदूनिया का यूनानी राजा (अन्टीगोनस, गोनेटास) मग (उत्तरी अफ्रीका में साइरेने का यूनानी राजा मगस) और अलिक सुन्दर (एपिरस अथवा कोरिन्थ का यूनानी राजा (अलेक्जेन्डर) में प्राप्त हुई है। इसी तरह दक्षिण की ओर चोल (तंजौर त्रिचनापल्ली के क्षेत्र में रहने वाले चोल) पाड्य (मदुराई रामनाथ पुरम — तिरुनेलवेली के क्षेत्र में रहने वाले) और ताम्रपर्णी (श्रीलंका) तक के उसे धम्म विजय प्राप्त हुआ। उसी प्रकार यहाँ राजा के राज्य के यवनों (इसका अर्थ सामान्यतः यूनानियों के लिए होता था। इस लेख में यवनों को अशोक के राज्य सीमा के अन्तर्गत बताया गया है वे सम्भव अफगानिस्तान में रहते होंगे, कम्बोज से (पश्चिमी पाकिस्तान और अफगानिस्तान का एक क्षेत्र) नाभ पंतियो (पहिचान नहीं हो सकी है। और नाभक के (पहिचान नहीं हो सकी है। वंशानुगत भो जो (बरार के क्षेत्र में रहने वाले) आन्ध्रों (डेकान के उत्तरी क्षेत्र में रहने वाले) तथा पुलिंदों (विन्ध्य के क्षेत्र में रहने वाली जाति) सब जगह अशोक का धर्मानुशासन माना जाता है। जहाँ उसके दूत नहीं जा पाते वहाँ भी लोग उसके ~~दूत~~ नहीं जा पाते वहाँ भी लोग उसके धर्मादेशों और धर्म विधान को सुनकर धर्माचरण करते हैं और करते रहेंगे। इस प्रकार प्राप्त विजय सर्वत्र प्रेम से सुरक्षित रहती है। वह प्रेम धर्म विजय से ही प्राप्त हो सकता है। अशोक ने पारलौकिक कल्याण को ही बड़ा समझा है। प्रस्तुत धर्मलेख इसलिए लिखवाया गया है कि जिससे अशोक के पुत्र, पौत्र और प्रपौत्र नये देश विजय करने की इच्छा त्याग दें।

वे धम्मविजय को ही वास्तविक विजय समझते। यह इसलोक और परलोक दोनों के लिए अच्छा है।

इस लेख से अशोक की राज्य सीमा का बोध भी होता है। यवन, कंबोज, भोज, आन्ध्र, पुलिंद अशोक के राज्य में रहते थे। सीमान्त प्रदेशों के राजाओं के नाम से पता चलता है कि उत्तर पश्चिम में अफगानिस्तान और दक्षिण में कावेरी नदी के उत्तरी भाग तक उसका साम्राज्य फैला हुआ था।

जिन यूनानी राजाओं का नाम दिया गया है उनकी तिथि सुनिश्चित है जिसके आधार पर अशोक का काल भी ठीक-ठीक जाना जा सकता है क्योंकि वे राजा उसके समकालीन थे। वे राजा निम्नलिखित हैं —

(i) सीरिया का अन्टियोकस II थियोस (261-246 B.C)
(ii) मिस्र का टोलेमी II फिलेडेल्फस (285-246 B.C)
(iii) मकदूनिया का अन्टिगोनस (268-239 B.C
(iv) काइरेन का मगस (300-258 B.C)
(v) एपिरस का अलक्जेन्डर वह 258 B.C तक

इन समकालीन राजाओं की तिथियों से ज्ञात होता है कि अशोक 258 B.C के पहले अवश्य ही सिंहासन पर बैठा।

Scanned with CamScanner